शतावधानी श्री आर. गणेश द्वारा रचित वर्षाविभूतिः ।

वर्षाविभूतिः

(श्लोक संख्या= 1-10, 13, 18, 21, 22, 23 और 24)

1. मेघमषीमवलम्ब्य----------रसार्द्रम् । (In Book)

मेघरूपी स्याही से चमकती बिजली रूपी लेखनी का अवलंबन लेकर धरती रूपी कागज(पत्र) पर वर्षा की बूंद रूपी अक्षरों से यह आकाश सरस वर्षाकाव्य लिख रहा है ।

2. नक्षत्रक्षत्रसैन्यं----------राजतेजोऽतिवेलम् । (In Book)

(वर्षाकाल में) घनघटा व्योमरूपी संग्रामभूमि में नक्षत्ररूपी सैन्य को धराशायी कर देती है अर्थात उन्हें ओझल कर देती है । हंसरूपी श्वेतछत्र गिर जाते हैं अर्थात् हंसों ने उड़ना बंद कर दिया है । वापीरूपी दुर्गों का भेदन कर घनघटा कमल पुष्पों को धाराओं से पीड़ित करती है । जिगीषु(विजयेच्छु-जीतने की इच्छा वाला) वर्षाकाल अत्यंत निपुणतापूर्वक चंद्ररूपी राजा के तेज को चिरकाल तक ग्रस लेता है । (रात में आकाश में बादल छाए रहने के कारण चंद्रमा उदित नहीं होता है ।)

3. सहस्रधारा----------पूर्वरङ्गे । (In Book)

बादलरूपी मार्दङ्गिक सहस्त्रधारारूपी अंगुलियों के अग्रभागों से हृदयप्रिय आसारित उत्तम श्रुति का इच्छुक बना हुआ विद्युतरूपी नर्तकी की नर्तन प्रारंभ करने के पहले पूर्वरंग के रूप में दिखाई देता है ।

4. रागानुयोग----------शीकरसुस्वराग्रम् । (In Book)

वृष्टिरूपी नायिका वर्षा युक्त टेढ़ी इंद्रधनुष रूपी वीणा को अपने विद्युत रूपी नखों से बजाती हुई गर्जन से युक्त आसारतान(मूसलाधार वृष्टि) को सर्जित करती है जिसमें शीकर रूप शोभन स्वर निकल रहे हैं ।

5. जरद्वारी----------यौवनम् । (In Book)

महासागर का पुरातन जल सूर्य की औषधि से भावित होकर प्रावृट् के बिंदुओं में कायाकल्पता द्वारा नवयौवन प्राप्त करता है ।

6. रहोरतिरहो----------श्रृङ्गाररसतामगात् । (In Book)

आकाश में मेघमाला के प्रति सूर्य की रहोरति(एकांत स्थान में होने वाले रति) ऋजुरोहित रूप से श्रृंगार रस को प्राप्त कराता है । अर्थात् आकाश में बादलों की पंक्ति के मध्य स्थित सूर्य की झुटपुट लालिमा मानो एकांत में वास करने वाले प्रेमीजनों को ऋजुतापूर्वक श्रृंगार रस की आनंदानुभूति कराता है ।

7. पृथिवीपुलकप्रख्ये----------जलदागमनायकः । (In Book)

वृष्टि के द्वारा शीघ्र ही हुआ शस्यप्ररोहण ऐसा प्रतीत होता है मानो पृथ्वी रूपी नायिका को रोमांच हो आया हो । वर्षाकाल रूपी नायक ने इस स्थिति को नायिका(पृथ्वी) के साथ अपने मिलन की सार्थकता माना ।

8. वसुन्धरा----------पाणिवाणिपयोदया । (In Book)

निःसंदेह इस वृष्टि रूपी जलधारा को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो बादल रूपी जुलाहे के द्वारा अपने हाथ से करघे पर पृथ्वीरूपी वधू के लिए बुना गया वस्त्र हो ।

9. अन्तर्वत्नीसमज्यार्थमिव----------नीपकङ्कणश्रृङ्खलाः । (In Book)

पृथ्वी पर सर्वत्र वर्षा का प्रभाव हरियाली के रूप में दिखाई पड़ता है चाहे वह जंगल हो या बाग या पहाड़ की तलहटी । अंदर और बाहर स्थित सभी वस्तुएं प्रकाश की किरणों से और भी उद्दीप्त होकर पृथ्वी की शोभा को बढ़ा रही हैं । कदंब के वृक्ष के फूलों की पंक्तियां मानो पृथ्वीरूपी वधू के हाथों में कंगन सा शोभित हो रही हैं ।

10. अहल्यापि----------मही मुहुः । (In Book)

श्रद्धेया एवं पूज्या अहिल्या के सौंदर्य से आकृष्ट(मोहित) इंद्र द्वारा बार-बार फुसलाई गई(जड़ीभूत की गई) अहल्या के समान किसान वर्षा होने पर भूमि को हलों से बार-बार जोतते हैं(जमीन को फसल बोने योग्य या कृषि करने योग्य बनाते हैं ।)

11. रसदा----------अम्बुपादपान् । (In Book)

ऐसा प्रतीत होता है कि जो रसद(रसीले फल) थे वे ही फल वर्षाकाल में नीचे गिरने के भय से जामुन के पेड़ों के ऊपर लग गए।

12. आसारसारेण----------श्यामांबुदोऽसावृजुरोहितेन। (In Book)

मानो वृष्टि से फुहार की चमक से शंकर के गौरभाव को जीत लिया है और नीले नीले मेघों ने कार्तिकेय के नीले मयूर की शोभा को।

13. नेयं पयोद्पटली----------मधुमासमुग्धाः। (In Book)

(प्रवासी जनों की पत्नियों के मुख पर मँडराने वाले) ये भौंरे उनके कानों में पहने हुए शिरीष फूलों से बहते पराग रस का पान करने के इच्छुक जब देखते हैं कि यह न तो बादल है, न ही वृक्ष अथवा डंठल है और न ही अर्जुन या कुटज के फूल का पराग तब वे विवश हो गुंजन मात्र करते हुए वहां से प्रस्थान कर जाते हैं।

14. अन्वेष्टुमिव----------वलन्ति किम्। (In Book)

वर्षाकालीन मेघाच्छन दिनों में रंग-बिरंगे सुगंधित फूलों के पराग की खोज में यह भौंरे मुँह ऊपर की ओर उठाए हुए गुंजार करते हुए शीघ्रतापूर्वक अंतरिक्ष में उड़ रहे हैं।

15. निश्शेषं----------अनेकाशयाः। (In Book)

वर्षा की समाप्ति के बाद प्रचंड(भयंकर) बादलों द्वारा सर्वंसहा(पृथ्वी) को जंगल-सा श्रीविहीन कर दिया गया है। यहां अनेक गर्त-गड्ढे, भँवर इत्यादि जैसे अर्बुद बना दिए गए हैं जिनमें वर्षा का पानी भरा हुआ है और उनमें कुशल मेंढक टर्रा रहे हैं। यह सूर्य भी(भीषण) ताप से (अपनी असह्य किरणों द्वारा) मानो समस्त प्राणियों को अनुशासित कर रहा है अथवा अनुशासन की शिक्षा दे रहा है।

16. जलदशबरभीतो----------कां दशां वा। (In Book)

वर्षा काल में बादलों के गर्जन एवं बिजलियों की चमक से भयभीत जंगली जाति (शबरादि) प्राणियों की अब अर्गला कहां ? अर्थात् वर्षा के डर से अर्गला(कुंडी) गिराने अथवा बंद करने का क्या प्रयोजन? बड़े कष्ट की बात है कि चंद्रमा में अवस्थित मृगी अब कहां चली गयी अथवा किस दिशा को प्राप्त हो गयी? कहने का तात्पर्य यह है कि वर्षा ऋतु अब समाप्त हो गयी है। सूर्य निकल आया है इसलिए चाँद और चाँद में स्थित मृगी नहीं दिखायी दे रही है।